मंडपम सी एम एफ आर आइ के राजा और रानी की कहानी

राजु शरवणन
सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र, मंडपम कैंप, तमिल नाडु
संपर्क का पता : saravanan.r@icar.org.in

केन्द्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान के मंडपम क्षेत्रीय केंद्र की विरासत 75 वर्ष में किए विभिन्न प्रकार के समुद्री जैविक अनुसंधान हैं, जिनकी शुरुआत वर्ष 1947 में हुई थी। सी एम एफ आर आइ के मंडपम क्षेत्रीय केंद्र में काम किए गए कई अग्रदूतों और अध्यक्षों ने भारतीय उपमहाद्वीप में समुद्री मात्स्यिकी से संबंधित अनसुनी परियोजनाओं में अपने रचनात्मक सोच के लिए प्रशंसा हासिल की। दक्षिण-पश्चिम और उत्तर-पूर्व मानसून– दोनों से प्रभावित होने के अलावा उत्तर में पाक खाड़ी और दक्षिण में मन्नार की खाड़ी के बीच स्थित मंडपम केंद्र, समुद्र तल की जैव विविधता को भी बढ़ाता है।

हमारे देश में स्थित अनेक तटीय क्षेत्रों की तुलना में मन्नार खाड़ी और पाक खाड़ी की प्रवाल भित्ति और समुद्री घास का क्षेत्र कई जीवन रूपों से संपुष्ट है। यह केंद्र में काम किये गए अनुसंधानकारों को अनुसंधान के विविध आयामों को परखने में सक्षम बनाने में सहायक निकला। समुद्री स्तनियाँ, समुद्र के बड़े जानवर हैं जो मानव जाति को तब से आकर्षित कर रहे हैं जब से इनके बारे में पता चला हैं। मन्नार खाड़ी और पाक खाड़ी में स्थित चरागाहों के समुद्री घास खाकर सौम्य, अद्वितीय समुद्री स्तनी "समुद्री गाय" (*ड्युगोंग ड्युगोंग*), तमिल में 'अवुलिया',ने अतिजीवितता दिखायी। बीसवीं सदी के आरम्भ में इनकी संख्या काफी बढ़ रही थीं परन्तु बाद में, माँस एवं अन्य भागों के लिए शिकार करके इनकी संख्या में कमी आ गयी। अतः वर्ष 1972 से ये वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के तहत संरक्षित हैं।

वर्ष 1950 से सी एम एफ आर आइ मंडपम केंद्र के वैज्ञानिक इन जानवरों का अध्ययन करने की कोशिश कर रहे हैं। केंद्र में दिनांक 23 मार्च, 1955 को 95 से.मी. से युक्त लम्बी ड्युगोंग (समुद्री गाय) को लाया गया और मई 25, 1955 को उसकी मृत्यु होने से पहले दो महीने तक केंद्र में रही। भारतीय वैज्ञानिकों द्वारा इन समुद्री

समुद्री गाय

स्तनियों के पालन का यह पहला प्रयास था। केंद्र में दिनांक 14 जून, 1955 को एक और ड्युगोंग लायी गयी और एक महीने के बाद, 22 जुलाई, 1955 को उसकी मृत्यु हुई।इसके बाद, वर्ष 1956 में वैज्ञानिकों ने चार महीने तक तालाबों में 2.5 मीटर से युक्त लंबे ड्युगोंग का पालन किया। मंडपम केंद्र के वैज्ञानिकों को इन स्तनियों के प्रारम्भिक पालन में थोड़ी सफलता मिली। हालाँकि वैज्ञानिकों ने हिम्मत नहीं हारी और आगे मन्नार खाड़ी के 'हेर द्वीप' से दिनांक 2 अक्तूबर, 1959 को 160 सेंटीमीटर से युक्त नर ड्युगोंग (समुद्री गाय) को लाकर टैंक में पालन किया। दो महीने बाद, दिनांक 6 दिसंबर, 1959 को लगभग 196 सेंटिमीटर से युक्त मादा ड्युगोंग को लाया गया और टैंक में पालन किया गया।कुछ दिनों के बाद ये टैंक के वातावरण से अनुकूलित हुए।

ड्युगोंग (समुद्री गाय) शाकाहारी हैं; इसलिए, उन्हें एक दिन में लगभग 50 से 60 किलोग्राम समुद्री घास खिलाई जाती थी, और ज्यादातर उन्हें हाथ से खिलाया जाता था या फिर पत्थरों की मदद से डुबोया जाता था। मद्रास राज्य की मात्स्यिकी मंत्री श्रीमती लूर्दम्माल साइमन ने दिनांक 19 दिसंबर, 1959 को जूलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया (भारतीय प्राणी संस्था) की मंडपम शाखा के दशवार्षिक समारोह के संबंध में केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान का दौरा किया और प्राणी एवं मात्स्यिकी प्रदर्शन के उद्घाटन के दौरान उनके द्वारा इन दो ड्युगोंगों (समुद्री गायों) का नाम "राजा" और "रानी" रखा गया ।

सी एम एफ आर आइ मंडपम में एक दशक से अधिक इन दोनों ड्युगोंगों का अच्छी स्थिति में पालन किया। वर्ष 1970 जुलाई में ड्युगोंग 'राजा' की मृत्यु हुई और उसी वर्ष अगस्त में 'रानी' की भी मृत्यु हुई। जलजीवशाला की बंद अवस्था में 10 साल और 10 महीने इन ड्युगोंगों का जीवित रहना वास्तव में एक विश्व रिकार्ड है। सी एम एफ आर आइ मंडपम के कार्मिकों द्वारा दिए गए अश्रांत देखभाल के कारण ही यह संभव हो पाया। समुद्री स्तनियों के जीव विज्ञान को समझकर वैज्ञानिक प्रगति लाने में इन प्रजातियों ने काफी मदद की और पर्यटकों के मन में इनकी यादें कभी मिटती नहीं हैं। केंद्र में नर और मादा समझकर दोनों ड्युगोंगों का पालन किया था, परन्तु मृत्यु के बाद दोनों ड्युगोंग नर पाए गए। सी एम एफ आर आइ मंडपम क्षेत्रीय केंद्र के संग्रहालय में इन दोनों ड्युगोंगों को परिरक्षित करके प्रदर्शित किया गया हैं। वर्ष 2022 में संग्रहालय का पुनः संचयन कार्य किया था और अब यहाँ ड्युगोंग प्रदर्शित हैं।

मंडपम क्षेत्रीय केंद्र का समुद्री संग्रहालय